Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : **www.shisrrj.com**
OPEN ACCESS
© 2025 SHISRRJ | Volume 8 | Issue 2
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ258224

श्री श्री 1008 श्री शान्तिनाथ जी महाराज का जीवन परिचय

शंभूसिंह
माधव विश्वद्यालय, पिण्डवाड़ा, सिरोही (राज)

डॉ. संजय परिहार, सहायक प्रोफेसर
इतिहास विभाग, माधव विश्वद्यालय, पिण्डवाड़ा, सिरोही (राज)

Article Info
Accepted : 01 April 2025
Published : 12 April 2025

Publication Issue :
March-April-2025
Volume 8, Issue 2

Page Number : 121-133

प्रस्तावनाः—

भारतीय इतिहास मे दक्षिण भारत की राष्ट्रकुट/राठौड वंश की कन्नौज (बदायूं) शाखा से आकर मारवाड/जोधपुर में शासन स्थापित करने वाल मारवाड के राठौड वंश के आदिपुरूष रावसिहा जी थे। उन्हीं के वंशज रावजोपसा जी के पुत्र राव जोरा जी राठौड के कुल में भागली गॉव जिला जालोर (राज.) में अवतरित दिव्य महात्मा श्री श्री 1008 श्री शान्तिनाथ जी महाराज जिनका आज भी हर कुम्भ मेले एवं पूरे भारतवर्ष के संत समाज में विशेष सम्माननीय स्थान प्राप्त है। यह उन्हीं महात्मा का जीवन परिचय है।

विस्तृत इतिहास एवं वंशावलीः—

भारतीय इतिहास में मुहणोत नेणसी री ख्यात, दयालदास की ख्यात या जोधपुर राज्य की ख्यात के अनुसार दक्षिण भारत के कन्नौज राज्य के बदायूँ शाखा से राष्ट्रकूट/राठौड शासको के साम्राज्य का राजपुताने (राजस्थान) मे मारवाड (वर्तमान जोधपुर संभाग) मे विस्तार हुआ।) पाली जिले के बिठु (देवली) के स्मारक लेख के अनुसार मारवाड राज्य के राठौड शासको के आदिपुरूष राव सीहा जी का वि.सं. 1330 (ई.स. 1273) में मृत्यु होना उल्लेखित पाया जाता है। बालेचा चौहानों व मीणाओं से रक्षा हेतु पाली के पालीवाल ब्राहम्णों ने राठौड शासक सेतराम के पुत्र राव सीहाजी (सिंहसेन) से कन्नौज से पुष्कर यात्रा के दौरान निवेदन किया तब राव सीहाजी ने खेड (पाली) राजधानी स्थापित

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

करते हुए अपना प्रभाव क्षेत्र बढाया। द्वारिका सभा के दौरान भीनमाल व ईडर में भी लाखा फुलाणी पर विजय प्राप्त करते हुए अपना शौर्यबल स्थापित किया। उनकी छः रानियों से पांच पुत्र हुए।

बारह जो बारोतरे पाली कियो प्रवेश।

सीहो कनौज छौड ने, आयो मरूधर देस।।

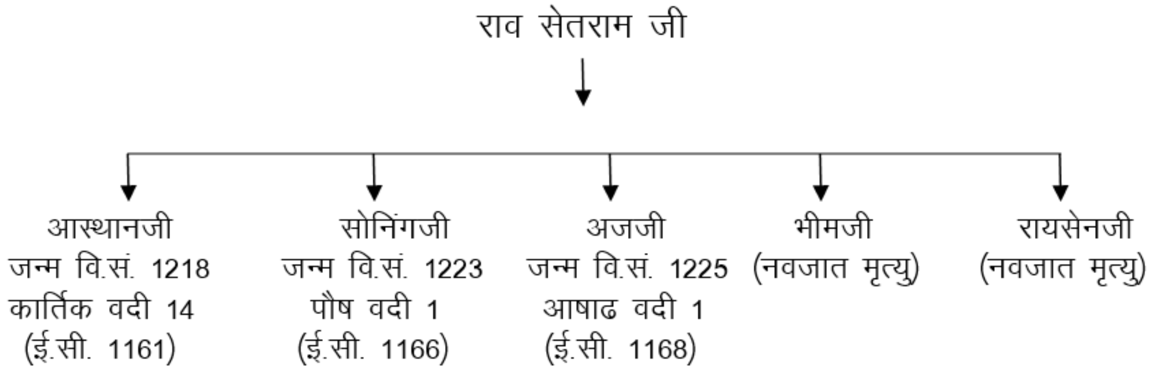

मुहणोत नैणसी की ख्यात के अनुसार राव सीहाजी की चावडी रानी के पुत्र आस्थान अपने ननिहाल मे पले एवं बाद मे पुनः पाली आकर प्रभाव स्थापित किया। आस्थान अलाउद्दीन खिलजी की सेना से लडते हुए पाली के तालाब के निकट वि.सं. 1248 वैशाख सुदी 15 (ई.स. 1191) को रणखेत रहे। ''जोधपुर राज्य की ख्यात'' के अनुसार राव आस्थान की दो राणियों से आठ पुत्र जन्मे–

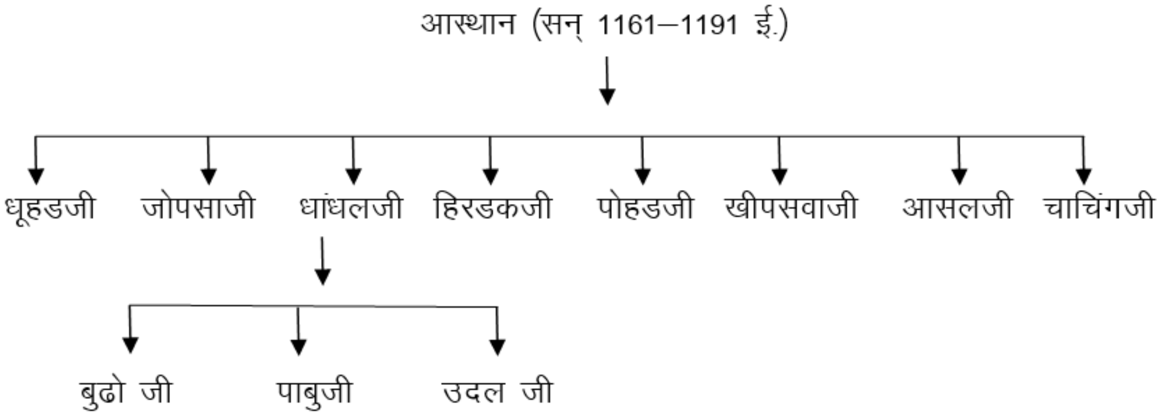

राजपुताने के इतिहास में राव धान्धल जी राठौड के वीरवीर पुत्र पाबुजी व जायल (नागौर) शासक जिन्दराव खींची के बीच गौरक्षार्थ हुए सन् 1276 ईस्वी के युद्ध का जनश्रुतियों,

दन्तकथाओं व लोग गीतों में बहुतायात मे वर्णन मिलता है। राजस्थान मे पांच पीरों में पाबुजी भी लोग देवता के रूप में पूजनीय है कोलु बेंगटी मे इनका पूजनीय स्थल है।

राव आस्थान जी के पुत्र जोपसा जी के ख्यातो एवं राव बहियो के अनुसार एक पुत्री एवं आठ पुत्र हुए–

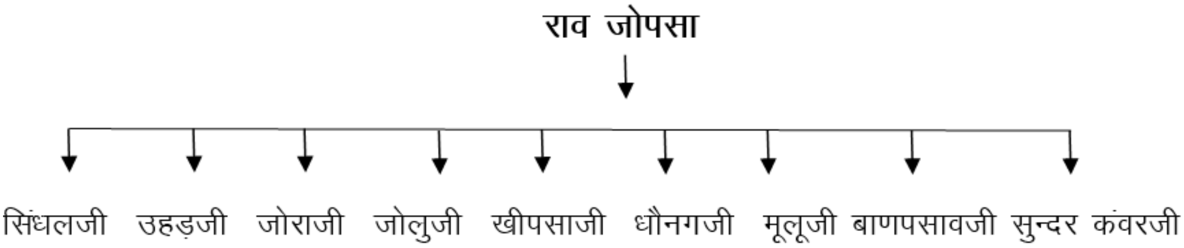

राव जोपसा

सिंधलजी उहड़जी जोराजी जोलुजी खीपसाजी धौनगजी मूलूजी बाणपसावजी सुन्दर कंवरजी

राव जोपसा ने खेड (पाली) से आकर जालोर के पास परमारो को हराकर 12 गांवों से बालवाडा पर गादी स्थापित की। प्रचलित दोहा

तेरहा सौ तेरहा मे बालवाडा कियो प्रवेश।
जोपसा खेड छोडे नै, आयो नव प्रदेश।।

राव जोपसा जी की पुत्री का विवाह जालौर चौहान शासक कान्हडदेव के भतीजे से करवा रखा था। राव जोपसा की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने पर भी जालोर के चौहान शासकों द्वारा व्यंग्यात्मक मजाक कर राव (भाट) चतुरभुज को दान लेने हेतु बालवाडा आगाह करने पर स्वाभीमान के धनी जोपसा जी ने प्रजा से उधार लेकर भी राव चतुर्भूज को लाख पसाव का दान दिया। इसके बाद नाथ समप्रदाय के आराध्य श्री जलन्धर नाथजी ने राव जोपसा जी को पर्चा दिया जिसमें कई हिरे मोतियों से उनके भण्डार बताया जाता है।

राव जोपसा के बडे पुत्र सिंधल जी का परिवार शाखाएं जालोर मे अधिकाधिक फली फुली एवं आहोर क्षेत्र में सिंधलवाटी के रूप मे जाना जाता है। राव जोपसा जी के एक अन्य पुत्र जोरा जी के वंशज जोरा/जोरावत राठौड शाखा के रूप मे जाने जाते है।

जोरा राठौडो की शाखा मे ही गॉव भागली जिला जालोर में नाथ सम्प्रदाय की मुख्य पीठ जालोर भेरूनाथ अखाडा के गादीपती श्री श्री 1008 श्री पीर जी शांतिनाथ जी अवतरीत हुए। पिरजी बावजी के चर्चे व चमत्कार जग जाहिर है।

मारवाड के राठौड वंश के आदि पुरूष राव सिंहाजी से श्री श्री 1008 श्री पीर जी शांतिनाथ जी तक की वंशावली:–

राव सिहाजी → आस्थान जी → राव जोपसा जी →
जोर सिंह → प्रताप सिंह → कोलसिंह → भगराज सिंह → भैरव सिंह → वागदास जी → पीथ सिंह → रतन सिंह → थोबन सिंह → वागसिंह → प्रबत सिंह → गोपाल सिंह → भुईदास जी → भेरूसिंह → हेमराज जी → बलुदान जी → राम सिंह → गिरधारीसिंह → लाखसिंह → वेनसिंह → लालसिंह → रावतसिंह → श्री ओटसिंह (श्री श्री 1008 श्री शान्तिनाथजी महाराज)

श्री श्री 1008 श्री शांतिनाथजी पीरजी का संक्षिप्त जीवन परिचय

जन्म– माघ कृष्णा पंचमी वि.सं. 1996 सोमवार प्रातः 3:30 बजे (दिनांक 29 जनवरी–1940 ई.स.)

जन्म स्थल– भागली सिंधलान, तहसील–जालोर, जिला जालोर

सांसारिक नाम– श्री ओटसिंह जी

माता–पिता का नाम– पूज्या श्रीमती सिणधार कंवर पत्नी श्री रावतसिंह जी जोरा राठौड

भाई– श्री मंगलसिंह जी, श्री बहादुरसिंह जी, श्री सांकलसिंह जी, (पीरजी श्री शांतिनाथजी चारों में सबसे छोटे थे)

गुरू– परमपूज्य श्री श्री 1008 श्री केसर नाथ जी महाराज

दीक्षा– कार्तिक सुदी पंचमी वि.सं. 2011 सोमवार (सन् 1954)

गादीपाठ– कार्तिक शुक्ला सप्तमी वि.सं. 2025 (सन् 1968)

प्रथम चातुर्मास– गांव–बैरठ सन् 1981

अंतिम चातुर्मास– गांव बोकडा सन् 2012

ब्रह्मलीन– आषाढ माह कृष्णा प्रतिपदा वि.सं. 2069 सोमवार (दिनांक 01 अक्टूबसर 2012) (उदयपुर)

श्री श्री 1008 श्री शांतिनाथजी पीरजी की लौकिक बातें

महर्षि जाबालि एवं महासिद्ध जलंधरनाथजी की तपोस्थली, वीर वीरमदेव सोनगरा की कर्मभूमि, स्वर्णगिरी एवं कणियागिरी पर्वत की तलहटी और जवाई नदी के तट पर बसे मरूभूमि जालोर के ऐतिहासिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक वैभव को पीर शांतिनाथ के रूप में प्रकट हुए दैदीप्यमान नक्षत्र ने अपने तप, साधना, व्यक्त्वि, कृतित्व और चमत्कारों से उंचाईयों की नई बुलंदियों तक पहुँचाया है।

जालोर की धरी का यह सौभाग्य था कि आप यहाँ अवतरित हुए। ये पूण्यभूमि भी बडी गौरमवयी है इसके लिये कहा जाता हैः–

जाल–लाल जलमै जठै सूर सती सिरमौर।

दीजो म्हाँनै देवता जनम भौम जालोर।।

आपके बचपन का नाम ओटसिंह था। गुरू केसरनाथजी की इच्छा पर आपकी दीक्षा हुई। आपकी औपचारिक शिक्षा नहीं हुई थी। आपके ही पैतृक गांव भागली सिन्धलान में केसरनाथजी महाराज धूणे पर रहते थे। आप वहाँ बचपन से आते–जाते रहते थे। आपका उनके प्रति लगाव था। उनके पास 5–7 गायें थी। आप उनकी गायों की भी सेवा करते थे। कई बार आप अपने घर से दूध का लोटा भरकर गुरू को पिलाने जाते थे। छोटे होने के कारण आपकी माताजी भी आपको कई बार लेने और पहुँचाने आती थी। गुरू के प्रति लगाव एवं भक्ति में रूचि देखकर आपके परिवार वालो ने भी आपको गुरू सेवा में प्रस्तुत करने की इच्छा व्यक्त की। अनुकूल समय और संयोग पर आप 7–8 वर्ष की कोमल आयु में ही गुरू सेवा में आ गये थे। जालोर आकर आपने शहर के एक निजी विद्यालय मे वीरमारामजी राजपुरोहित के पास साक्षर होने तक की शिक्षा प्राप्त की। वीरमारामजी राजेन्द्र नगर में (झूपों में) रहते थे। छः माह तक साक्षरता की शिक्षा प्राप्त कर आप पढना लिखना सीख गये थे। आपका ननिहाल बागरा में सोलंकी परिवार मे था।

कहते है कि पूत के पाँव पालने में ही दिख जाते है। होनहार बीरवान के होत चीकने पात। जो उम्र खाने पीने की और मौजमस्ती की होती है उस बचपन के दौर मे भी

आप चिन्तन मनन में धीर–गंभीर होकर गुरू–भक्ति में लीन रहते थे। दिव्य कर्म में लग गये। औपचारिक रूप से पूज्य केसरनाथजी ने विक्रम संवत् 2011 कार्तिक शुक्ल पंचमी को सोमवार सांय 4 बजे सिरे मंदिर पर आपको शिष्यत्व दिया। सिरे मंदिर के पीठाधीश्वर एवं महंत के रूप में आपका गादी तिलक विक्रम संवत् 2025 चैत्र शुक्ला सप्तमी, सोमवार के दिन हुआ था।

इसके बाद सन्यास पथ पर इस कदर आगे बढे कि कभी पीछे मुडकर नहीं देखा तथा एक से बढकर एक ऐसी परम्पराएँ स्थापित की, ऐसे चमत्कारिक कृत्य किये जिनसे पूरा संत समुदाय गौरवान्वित हो गया। आपकी मर्यादाएँ, आपके विचार, आपका व्यक्तित्व, आपका आभामण्डल हर किसी को प्रेरित करता रहा। आप साक्षात् शिवरूप बन गये। आपका अवतरण जीव को माया के बंधन से मुक्त करके ब्रãदर्शन कराने, आत्म साक्षात्कार कराने और जीव मात्र को परम सुख शांति प्रदान करने के लिए हुआ था और प्राणीमात्र के हितार्थ आपका जीवन विस्तीर्ण रहा। आप श्रद्धालुओं को उसी रूप में नजर आते थे जिस रूप में वे आपको देखते थे। आपके व्यक्ति की सैंकडों खुबियां जनमानस को आकर्षित करती रही। आपका दिव्य तथा सुंदर रूप, कानों में कुण्डल, भगवा वेश, गले में रूद्राक्ष की माता, सुंदर मुखमुद्रा, और शांत स्वरूप बरबस ही हर किसी का मन मोह लेता था। एक बार आपके चेहरे के तेज को देखकर कोई भी आपकी और आकर्षित हुए बिना नहीं रहता था। आपकी गुरू–गंभीर योगमुद्रा, मधुर वाणी, सहज आशीर्वाद, समय की पाबंदी, राजनीति और जातिपाँति से परे, हर दिल अजीज, परोपकारिता, आडम्बर से दूर, मर्यादा प्रेम, सरल दर्शन एवं भक्त वात्सल्य जैसी विशेषताओं से हर कोई प्रभावित था। आप जब शहर में निकलते थे तो सडक के दोनों और हाथ जोडें खडे लागे आपके दर्शन की एक झलक पाने को बेताब हो जाते थे। वह मनोरम दृश्य बडा सकूनदायक होता था। जालोर जिले की जनता ही नहीं पीरजी के चमत्कारों से गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, पंजाब तथा हरियाणा मे रहने वाले श्रद्धालु भी भलिभांति परिचित थे। एक के बाद एक पीरजी ने अपने जीवनकाल मे ऐसे कई कार्य किये, जो किन्हीं चमत्कारों से कम नहीं थे। आज भी उनके चमत्कारों एवं सरल स्वभाव का बखान करते भक्त नहीं थकते। आम जन में आज भी यह धारणा है कि पीरजी का नाम

लेकर शुरू किया गया कार्य भी निष्फल नहीं होता। सदियों तक जनता उनके चमत्कारों और कृत्यों को याद रखेगी।

आपके जीवन बहुआयामी था। आपको बचपन से लेकर अंतिम क्षणों तक अनेक अनुभवों से गुजरना पडा। बचपन में आपने गुरू की गाय चराने का कार्य भी किया। प्राचीन गुरूकुलों के ऋषिमुनियों के शिष्यों की तर्ज पर आप गुरू केसरनाथजी की गायें लेकर भागली, रेवत तथा चित्तहरिणी के ऊँचे–ऊँचें रेत के धोरों में चराने जाते थे। उस एकांत एवं सुरम्य वातावरण में ही आपके अन्दर भक्ति एवं योग का प्रस्फुटन हुआ। आपने भैरूनाथजी के अखाडे के ऊँट एवं गायें भी बखुबी चराई, पाली–पोसी। ऊंटों एवं गायों के भोजन के लिए आस–पास के गाँवों को एक एक खेत, पूरा जंगल, आपके पद–चिन्हों से परिचित हो गया था। भागली, रेवत, बैरठ, तड़वा, कलापुरा, पीजोपुरा सांफाडा सहित गाँवों के अलावा चित्तहरिणी के धोरों एवं सिरे मन्दिर के पिछवाडे की तलहटी में गाये चराने, ऊँटों को चारे पानी के लिए विचरण करते हुए आपके चरण कमलो के स्पर्श का सुख इन क्षेत्रों को भी मिला। गायों एवं ऊँटों के चारे हेतु खेजडी की पत्तियों को पाला इकट्ठा करते हुए आपके कर–कमलों को खेजडी की डालें भी काटने का अनुभव हुआ। यह विधि का विधान था अथवा कुछ और। इतने अमीर और दिव्य व्यक्तित्व को भगवान श्री कृष्ण जी तर्ज पर एक ग्वाले की भूमिका भी स्वयं निभानी पडी। आपने शुन्य से शिखर तक की यात्रा शानदार एवं भव्यमय ढंग से पूरी की। सिरे मन्दिर पर अखण्ड ज्योत जलाने हेतु घी (दिवेल) की उगाही एवं कटाला उगाही हेतु आसपास के पूज वाले क्षेत्रों के सैकडों गाँवों के भाविक परिवारों के घर–घर जाकर अलख जगाया, पगलियें किये एवं उन्हें शुभाशीष प्रदान कर धन्य कर दिया। छोटे–बडे, अमीर गरीब का भेद किये बगैर आप प्रत्येक उस घर मे पधारे जिसकी सिरे मंदिर के प्रति श्रद्धा थी। कटाला उगाही के दौरान आप प्रत्येक गाँव के खते, खलिहान एवं कुएं तक भी पधारे। आपके चरण कमल से लोगों के घर, खेत, खलिहान, कुएं पवित्र हो गये। जहाँ–जहाँ आपके पगलिये पडे, वहाँ–वहाँ लीला लहर हो गई। आपसे मिलने के लिए श्रद्धा का सैलाब उमड पडता था। उस समय आज की तरह वाहन सुविधा नही थी, आप ये यात्राएँ बैलगाडी में अथवा पैदल करते थे। सिरे मंदिर से अखाडे तक एवं इन गाँवों तक की यात्रा करते–करते जीवन

पर्यन्त आपके चरण कमलों ने मार्ग की प्रत्येक सीढी, एक–एक पत्थर को धन्य कर दिया। आज सिरे मंदिर की सीढियों एवं पहाड का एक एक प्रस्तरखंड आपके व्यक्तित्व की भव्यता एवं दिव्यता की कहानी का स्वयं कहता हुआ प्रतीत होता है। कणियागिरी पर्वत का एक–एक प्रस्तर आपकी यशोगाथा गा रहा है। आपका विलक्षण व्यक्तित्व चिरस्मरणीय है। आप अपने भक्तों के âदयरूपी मंदिर मे सदा बिराजमान रहेंगे। बार–बार आपका स्मरण हो आता है। आपके प्रति श्रद्धा अक्षुण्य है। आप हमेशा के लिए अमर है।

श्री श्री 1008 श्री शांतिनाथजी पीरजी की विशेषताऐं

परम पूज्य शांतिनाथ जी महाराज की मर्यादाए एवं उनके विचार हर किसी को प्रभावित करते रहे। कोई उन्हें राम का स्वरूप कहता तो कोई उन्हें शिव का प्रतीक। श्रद्धालुओं के लिए शांतिनाथजी वैसे ही थे जिस रूप में वे उन्हें देखते थे। उनके व्यक्तित्व में अनेक महत्वपूर्ण विशेषताएँ थी जिनके कारण सभी आकर्षित होते थे।

कुम्भ का मेला जिमाणाः– एक बार पीरजी श्री शान्तिनाथ जी प्रयागराज कुंभ मेले मे दर्शनार्थ गए हुए थे। तब वहा सन्त समाज मे से किसी ने पीरजी को व्यगात्मक बात के रूप में कुम्भ मेला जिमाने का कटाक्ष किया। तब बावजी ने चामत्कारिक रूप से प्रयाग कुम्भ मे भोजन प्रसादी की व्यवस्था भेरूनाथ अखाडा जालोर की तरफ से रखी उस वक्त बिना अर्थव्यवस्था के कुम्भ मेला जिमाणे से हर कोई आश्चर्यचकित रह गया। तथा साधु समाज ने पीरजी को सर्वश्रेष्ठ स्थान से सम्मानित किया एवं आज भी हर कुम्भ मेले एवं पूरे भारतवर्ष में संत समाज मे जालोर के भेरूनाथ अखाडे एवं श्री श्री 1008 श्री शान्तिनाथ जी महाराज को विशेष सम्मान प्राप्त है।

भगवा पगड़ीः– शांतिनाथजी महाराज सिर को पवित्र भगवा वस्त से पगडी स्वरूप में ढककर रखते। उनका यह स्वरूप सभी को आकर्षित करता।

कानों में कुण्डलः– महाराजजी के कानों में कुण्डल बहुत ही सुंदर लगते थे। इन्हें मुद्रा कहा जाता है। यह नाथ साधुओं की विशेषता होती है। लम्बे लम्बे कुण्डल पहने शांतिनाथजी हर किसी का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित कर लेते थे।

रूद्राक्ष की माला:– उनके गले में रूद्राक्ष की माला सुशोभित थी। बडे–बडे रूद्राक्ष की मालाएं पहले वे साक्षात शिव जैसे लगते थे। कई बार किसी श्रद्धालु पर कृपा कर उसे अपनी माला पहना भी देते थे।

गेरूआ चौला:– उनके शरीर पर भगवा रंग का चोला हर किसी का मन मोह लेता। इसके अलावा उन्हें किसी अन्य वेशभुषा मे कम ही देखा जाता। एक दंतकथा के अनुसार पार्वती ने सर्वप्रथम प्रसन्न होकर, अपने रक्त से रंग कर चोला गोरखनाथ जी को दिया था। तभी से यह गेरूआ रंग योगियों का विशिष्ट रंग बन गया।

शांत स्वरूप:– उनका स्वभाव शांत था। वे शांति से सभी की बाते सुनते। सभी को हमेशा धैर्य के साथ काम करने की बात कहते। इसलिये लोग आत्मीयता से उन्हें अपनी समस्या बताते। पीरजी भी उनकी पूरी बाते सुनते।

बन गए पीरजी:– न केवल हिन्दुओं में बल्कि मुस्लिमों में भी वे समान रूप से पूजे जाते थे। हिन्दू उन्हें नाथजी कहते तो मुस्लिम पीरजी। महाराजजी भी सभी को समान रूप से आर्शीवाद देते थे।

मित भाषी संत:– पीर शांतिनाथ का शांत स्वरूप ही उनकी सबसे बडी विशेषता थी। अधिकांशतः वे कम ही बोलते थे और किसी भी विषय पर वे सीधे एवं सपाट शब्दों मे ही बोलते थे।

समय के पाबंद:– नाथजी समय के पाबंद थे। उनका कार्यक्रम तय समय पर शुरू होता। भीड के कारण देरी होती तो वे रथ पर सवार होकर लोगों को आगे चलते रहने का इशारा कर देते और कोशिश करते ही जहॉ भी पहुंचना है समय पर पहुंच जाए।

सहज आशीर्वाद:– उनका आशीर्वाद सहज था। हर कोई उन तक आसानी से पहुंच सकता था। हर कोई उनसे बात कर सकता था। कभी ना तो उन्होनें किसी को रोकास ना ही उनके सेवकों ने कोई टोका रोकी की। दूर–दूर से लोग आते, नाथजी को पुछते पता चलता कि विश्राम कर रहे है तो घंटों तक उनका इंतजार करते और फिर मिलकर जाते।

सरल दर्शन:– नाथजी के दर्शन की हर किसी को आतुरता रहती। जहॉ भी मौका मिलता लोग उनके दर्शन के लिए पहुंच जाते। बावजी भी सरलता से भक्तों को दर्शन देते। जब

उन्हें पता चलता कि लोग बाहर दर्शन के लिए इंतजार कर रहे है तो नींद से उठकर आ जाते। शहर से बाहर आते–जाते तो लोगों को देखकर रूक जाते।

राजनीति से परेः– नाथजी राजनीति से दूर ही रहे। यह अलग बात है कि बडे–बडे नेता उनके भक्तों में शामिल रहे। लेकिन नाथजी ने उन्हें साधारण भक्तों की तरह ही माना। कभी राजनीति में रूचि नहीं दिखाई। लोग उन्हें आग्रह भी करते कि वे इस विषय पर चर्चा करें किंतु वे मना कर देते।

हर दिल अजीजः– सब भक्तो की सदैव इच्छा रहती कि महाराज जी उनके गृहप्रवेश, व्यापारिक प्रतिष्ठान, दुकान के शुभारम्भ, धार्मिक प्रसंग, भजन संध्या इत्यादि पर पधारें। जब भी उन्हें बुलाया जाता महाराज जी शामिल होतें।

समाज सेवाः– नाथजी समाज के प्रति भी जिम्मेदारी का भाव रखते। पौधरोपण हो या बावडियों का संरक्षण, समाज सेवा के सब कार्यो को उनका प्रोत्साहन मिलता। मूक प्राणियों, विशेषकर गाय के प्रति दयाभाव–श्रद्धाभाव रखते। नाथजी को जब भी समय मिलता वे पौधे लगाते, गायों का चारा खिलाते और बावडी का अवलोकन कर सफाई के निर्देश देते।

आंडबर से दूरः– नाथजी जीवनभर आंडबर से दूर रहे। उन्होनें कभी भी दिखावा नहीं किया। जहां भी रहते। सामान्य बनकर रहते। उनका सरल व्यक्तित्व ही उनकी पहचान थी अपने शिष्यों से भी वे यही कहते कि सरलता ही जीवन का सबसे बडा धन है, इसलिये सरल बने रहोगें तो ईश्वर प्राप्ति स्वतः होगी।

श्री श्री 1008 श्री शांतिनाथजी महाराज के चातुर्मास

जगत कल्याणी भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषता है इसकी गौरवशाली सन्यास परम्परा। और इस गौरवशाली सन्यास परम्परा की अद्भुत विशेषता है चातुर्मास। पूज्य शांतिनाथजी महाराज ने 1981 से लेकर 2012 तक प्रतिवर्ष लगातार चातुर्मास किए। श्रद्धालु बताते है कि पूज्य बावजी के चातुर्मास बिराजने का दिन हो और उस दिन वर्षा न हुई हो ऐसा कभी नहीं होता था। कम हो या अधिक लेकिन उस दिन वर्षा अवश्य ही थी, मानो इन्द्र भगवान स्वयं अभिनंदन कर रहे हो। यहॉ महाराजजी के सभी 32 चातुर्मास की सारणी प्रस्तुत हैः–

क.स.	सम्वत्	वर्ष	स्थान
1	2038	1981	बैरठ
2	2039	1982	चूरा
3	2040	1983	सिरे मंदिर जालौर
4	2041	1984	धाणसा
5	2042	1985	सिरे मंदिर जालौर
6	2043	1986	सिरे मंदिर जालौर
7	2044	1987	सिरे मंदिर जालौर
8	2045	1988	सिरे मंदिर जालौर
9	2046	1989	चूरा
10	2047	1990	सिरे मंदिर जालौर
11	2048	1991	सिरे मंदिर जालौर
12	2049	1992	चूरा
13	2050	1993	सिरे मंदिर जालौर
14	2051	1994	रेवतडा
15	2052	1995	मुण्डियाजी बिशनगढ
16	2053	1996	देबावास
17	2054	1997	चित्तहरिण रेवत गांव

क.स.	सम्वत्व	वर्ष	स्थान
18	2055	1998	सिरे मंदिर जालौर
19	2056	1999	डकातरा
20	2057	2000	भागली सिंघलान
21	2058	2001	खण्डप, बाडमेर
22	2059	2002	बैरठ
23	2060	2003	सिरे मंदिर जालौर
24	2061	2004	सिरे मंदिर जालौर
25	2062	2005	श्री भेरूनाथजी अखाडा
26	2063	2006	सिरे मंदिर
27	2064	2007	स्वर्णगिरी दुर्ग, जालोर
28	2065	2008	आशापुरी माताजी, मोदरा
29	2066	2009	बालवाडा
30	2067	2010	सिरे मंदिर जालौर
31	2068	2011	चूरा
32	2069	2012	बोकडा

निष्कर्ष–

सारांश मे कह सकते है कि नाथ सम्प्रदाय की जालोर पीठ भेरूनाथ अखाडा को विश्व प्रसिद्ध करने वाले एवं जनजन का आध्यात्मिक कल्याण करने वाले प्रातः स्मरणीय श्री श्री 1008 श्री शान्तिनाथ जी महाराज का जीवन परिचय शोधपत्र में प्रकाशित होना अत्यावश्यक है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची – पुस्तके :–

1. **मुहणोत नैणसी** – नैणसी री ख्यात, मारवाड रा परगनारी विगत।
2. **गौरी शंकर हिराचन्द ओझा** – जोधपुरा राज्य का इतिहास भाग – प्रथम व द्वितीय (वैदिक मंत्रालय अजमेर 1938), राजपूताने का इतिहास (राजस्थान ग्रंथागार, जोधपुर 1998)
3. **सुखवीर सिंह गहलोत** – जोधपुर का सांस्कृतिक वैभव (महाराजा मान सिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर–1991)
4. **रामकरण आसोपा** – मारवाडा का मूल इतिहास (रामकरण प्रेस, जोधपुर, 1895)
5. **डॉ. हरिमोहन सक्सेना** – राजस्थान का भूगोल
6. **गोपीनाथ शर्मा** – राजस्थान का इतिहास
7. **डॉ. मोहनलाल गुप्ता** – भारत का प्राचीन, मध्यकाल, आधुनिक इतिहास
8. **विश्वेश्वरनाथ रेऊ** – मारवाड का इतिहास (आर्कियोलोजिकल डिपार्टमेंटल, जोधपुर, 1940)
9. **सेरणा गांव के रावों की बहियां**
10. **डॉ. महावीर सिंह गहलोत** – विरम देव सोनगरा री वात।
11. हुकमीचंद जैन – राजस्थान का इतिहास, संस्कृति व परम्पराएं
12. पद्मानाभ– कान्हडदे प्रबन्ध

उपलब्ध शोध सामग्री –

प्रस्तावित शोध विषय के लिए निम्नलिखित संस्थानों व पुस्तकालयों से सामग्री संकलित करके अध्ययन किया जाएगा।

1. राजस्थान शोध संस्था चौपासनी, जोधपुर।
2. राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।

3. महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर।
4. जिला पुस्तक सग्रहलय, जालोर
5. जालोर गजेटियर पत्रिक
6. जोधपुर राज्य का इतिहास
7. सेरणा –धाणसा गावों के स्थानीय रावों की बहियां